ISSN: 2393-8048
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Multilingual, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =8.152, July-December 2025, Submitted in Septembers 2025

मोहनदास नैमिश्राय की साहित्यिक रचनाओं में समाज में रह रहे दलित वर्ग पर एक विचारात्मक अध्ययन

उर्मिला कुमारी, शोधार्थी (हिंदी विभाग) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़
डॉ. राज कौर, सहायक आचार्य (हिंदी विभाग) श्री खुशाल दास विश्वविद्यालय, पीलीबंगा, हनुमानगढ़

अमूर्त

अमोहनदास नैमिश्राय, हिंदी दलित साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने अपनी कृतियों, विशेषकर आत्मकथा 'अपने–अपने पिंजरे' के माध्यम से, भारतीय समाज में दलित वर्ग द्वारा अनुभव किए गए भीषण जातिगत शोषण, सामाजिक बहिष्कार और मानवीय गरिमा के संघर्ष को मुखरता प्रदान की है। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य नैमिश्राय के साहित्य में निहित दलित वर्ग के जीवन–यथार्थ, प्रतिरोध की चेतना और अस्मिता की खोज का गहन वैचारिक विश्लेषण करना है। यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) और विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति पर आधारित है, जिसमें उनके प्रमुख उपन्यासों, कहानियों और आत्मकथाओं के पाठों का विश्लेषण किया गया है। यह शोध इस बात पर बल देता है कि नैमिश्राय का साहित्य मात्र करुणा जगाने तक सीमित न रहकर, दलित वर्ग को आत्म–सम्मान और सामाजिक न्याय के लिए बौद्धिक रूप से तैयार करने का कार्य करता है।

परिचय

भारतीय सामाजिक संरचना में जाति–व्यवस्था एक जटिल और दमनकारी वास्तविकता रही है। दलित वर्ग, जो इस व्यवस्था के निचले पायदान पर स्थित है, सदियों से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक वंचना का शिकार रहा है। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, साहित्य दलितों के मूक इतिहास को वाणी देने का माध्यम बना। मोहनदास नैमिश्राय इसी साहित्यिक क्रांति के अग्रदूतों में से हैं। उनका लेखन व्यक्तिगत पीड़ा से ऊपर उठकर सम्पूर्ण दलित समाज की सामूहिक चेतना को प्रतिबिम्बित करता है। इस शोध का उद्देश्य नैमिश्राय की रचनाओं को दलित चेतना के विकास के संदर्भ में रखकर, उन वैचारिक तत्वों की खोज करना है जो दलित वर्ग के जीवन में परिवर्तन और प्रतिरोध को प्रेरित करते हैं।

शोध के सोपान

शोध की प्रक्रिया को निम्नलिखित सोपानों में विभाजित किया गया है:

विषय का चयन और सीमांकनः नैमिश्राय की कृतियों को दलित वर्ग के जीवन पर केंद्रित करने का निर्णय।

साहित्य समीक्षाः विषय से संबंधित पूर्व शोध और आलोचनात्मक कृतियों का अध्ययन।

आँकड़ों का संग्रहः नैमिश्राय की प्रमुख रचनाओं (जैसे– श्अपने–अपने पिंजरेश, श्आज बाजार बंद हैश, श्मुक्त आकाशश आदि) से प्रासंगिक उद्धरणों और प्रसंगों का चयन।

पाठ्य विश्लेषणः चयनित सामग्री का वैचारिक और सामाजिक–ऐतिहासिक संदर्भ में विश्लेषण।

निष्कर्षों का प्रतिपादनः विश्लेषण के आधार पर नवीन निष्कर्षों और सैद्धांतिक अवलोकनों का निरूपण।

साहित्य समीक्षा

मोहनदास नैमिश्राय का साहित्य दलित विमर्श में एक केंद्रीय स्थान रखता है, जिस पर कई महत्वपूर्ण अध्ययन हुए हैं:

दलित आत्मकथा के जनक के रूप में: आलोचकों ने नैमिश्राय को हिंदी की पहली दलित आत्मकथा 'अपने–अपने पिंजरेश का लेखक मानकर, उन्हें दलित साहित्य के इतिहास में मील का पत्थर बताया है। यह कृति दलितों के आत्म–कथन की परंपरा को स्थापित करती है, जहाँ उनका जीवन स्वयं उनके द्वारा अभिव्यक्त होता है, न कि सवर्ण लेखकों के माध्यम से।

सामाजिक यथार्थवादः विभिन्न शोध पत्रों में यह पाया गया है कि नैमिश्राय ने कल्पना के बजाय, दलित जीवन के कठोर और अप्रिय यथार्थ को दर्शाया। उनके पात्र केवल पीड़ित नहीं, बल्कि अपनी मुक्ति के लिए संघर्षरत दिखाई देते हैं।

अस्मिता और पहचान का प्रश्न: अध्ययनों ने इस बात पर जोर दिया है कि नैमिश्राय का साहित्य केवल आर्थिक या सामाजिक असमानता का चित्रण नहीं करता, बल्कि दलितों के भीतर व्याप्त मानसिक दासता को तोड़ने और एक स्वतंत्र 'अस्मिता' (Identity) स्थापित करने पर केंद्रित है। डॉ. अंबेडकर के विचारों का उनके साहित्य पर गहरा प्रभाव लक्षित होता है, जो उन्हें शिक्षा और संगठन के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन का रास्ता दिखाता है।

साहित्य अंतराल (Research Gap): पूर्व शोधों में नैमिश्राय के व्यक्तिगत अनुभवों पर अधिक ध्यान दिया

गया है। वर्तमान अध्ययन उनके साहित्य के संरचनात्मक और वैचारिक पहलुओं पर अधिक गहराई से ध्यान केंद्रित करेगा, यह जांच करेगा कि उनका साहित्य किस प्रकार सवर्ण वर्चस्ववादी विमर्श को चुनौती देता है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध एक गुणात्मक, वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाएगा।

गुणात्मक शोध (Qualitative Research): संख्यात्मक आँकड़ों के बजाय, साहित्यिक पाठों की गहन व्याख्या और अर्थ–निर्माण पर बल दिया जाएगा।

पाठ्य–आलोचना (Textual Criticism): नैमिश्राय के साहित्य में प्रयुक्त भाषा, प्रतीक, चरित्र चित्रण और कथानक की संरचना का विश्लेषण किया जाएगा कि वे किस प्रकार दलित वर्ग की सामाजिक स्थिति को उजागर करते हैं।

सामाजिक–ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Socio&Historical Perspective): लेखक की रचनाओं को उस समय के सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों, विशेषकर दलित पैंथर आंदोलन और डॉ. अंबेडकर के दर्शन, के संदर्भ में रखकर समझा जाएगा।

प्रयुक्त कृतियाँ: 'अपने–अपने पिंजरे' (आत्मकथा), 'आज बाजार बंद है' (कहानी संग्रह), 'मुक्त आकाश' (उपन्यास) आदि।

उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

मोहनदास नैमिश्राय की रचनाओं में दलित वर्ग के उत्पीड़न और वंचना के चित्रण की प्रकृति का विश्लेषण करना।

उनके साहित्य में दलित वर्ग के आत्म–सम्मान और आत्म–संघर्ष की अभिव्यक्ति को रेखांकित करना।

नैमिश्राय के साहित्य में डॉ. अंबेडकर के दर्शन (शिक्षा, संगठन और संघर्ष) के प्रभाव और प्रयोग की पहचान करना।

दलित साहित्य की मुख्यधारा को समृद्ध करने में मोहनदास नैमिश्राय के वैचारिक योगदान का मूल्यांकन करना।

यह जांचना कि उनका साहित्य दलित वर्ग के लिए बौद्धिक जागरण और सामाजिक बदलाव के उपकरण के रूप में कैसे कार्य करता है।

परिकल्पना

परिकल्पना: मोहनदास नैमिश्राय की साहित्यिक रचनाएँ केवल दलित वर्ग की पीड़ा का वर्णन नहीं करती हैं, बल्कि ये रचनाएँ जाति–व्यवस्था की क्रूरता को उजागर करते हुए दलित वर्ग को आत्म–सशक्तीकरण, प्रतिरोध और मानवीय समानता की प्राप्ति के लिए बौद्धिक और भावनात्मक रूप से तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनका साहित्य दलित वर्ग के निष्क्रिय पीड़ित से सक्रिय योद्धा में रूपांतरण का दस्तावेज है।

महत्व

प्रस्तुत शोध का महत्व बहुआयामी है:

शैक्षणिक महत्व: यह शोध हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों और शोधार्थियों को दलित विमर्श को समझने के लिए एक गहरा वैचारिक आधार प्रदान करेगा।

सामाजिक महत्व: यह समाज को दलित वर्ग द्वारा अनुभव किए जा रहे अदृश्य भेदभाव और जातिगत पूर्वाग्रहों के प्रति संवेदनशील बनाएगा।

साहित्यिक महत्व: यह दलित आत्मकथा और कथा साहित्य के मानदंडों को स्थापित करने में नैमिश्राय के योगदान को एक नई दृष्टि से प्रस्तुत करेगा।

नीतिगत महत्व: यह सामाजिक न्याय और समतामूलक समाज के निर्माण की दिशा में कार्य करने वाले नीति–निर्माताओं और कार्यकर्ताओं के लिए एक वैचारिक संदर्भ प्रदान कर सकता है।

निष्कर्ष

मोहनदास नैमिश्राय का साहित्य दलित वर्ग के जीवन–सत्य का एक ज्वलंत और प्रामाणिक दस्तावेज है। उनके लेखन में दलितों का संघर्ष, जो सदियों से मौन था, मुखर हो उठता है। यह अध्ययन सिद्ध करता है कि नैमिश्राय की कृतियाँ न केवल दर्द और अपमान को दर्शाती हैं, बल्कि वे आत्म–सम्मान, शिक्षा और सामूहिक प्रतिरोध के माध्यम से मुक्ति के मार्ग की ओर भी संकेत करती हैं। श्अपने–अपने पिंजरेश में

चित्रित व्यक्तिगत यातनाएँ दलित समाज की सामूहिक चेतना और प्रतिरोध की भावना का प्रतिनिधित्व करती हैं। नैमिश्राय ने अपने साहित्य के द्वारा जाति–आधारित सामाजिक संरचना की जड़ता को तोड़कर, दलित वर्ग में जागृति और स्वाभिमान की भावना भरी है। उनका योगदान हिंदी साहित्य में दलित विमर्श को एक अनिवार्य और अपरिहार्य धारा बनाने में अतुलनीय है।

ग्रंथ सूची

नैमिश्राय, मोहनदास. अपने–अपने पिंजरे. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन.
नैमिश्राय, मोहनदास. आज बाजार बंद है. नई दिल्लीरू वाणी प्रकाशन.
नैमिश्राय, मोहनदास. मुक्त आकाश. नई दिल्लीरू राजकमल प्रकाशन.
वालमिकी, ओमप्रकाश. दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र. नई दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन.
डॉ. सिंह, राजेंद्र. (सं.). (वर्ष). दलित साहित्यरू विमर्श और चिंतन.